ISBN:978-81-974990-9-8

12.कोविड–19का छात्रों के अध्ययन आदतों पर प्रभाव

डॉ. तेजराम नायक

प्राचार्य,
रायगढ़ कॉलेज ऑफ एजुकेशन, (बी.एड.)
कोटरापाली, रायगढ़ (छ.ग.).

आज के बदलते परिवेश में शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास होता है। देश और दुनिया के अधिकाधिक छात्रों को शिक्षा से जोड़ने की धीमी रफ्तार से चल रही निरंतर व स्थयी प्रगति वर्ष 2020 में कोविड–19 नामक वैश्विक महामारी से न सिर्फ बाधित हुई अपितु इससे छात्रों की अध्ययन आदतें भी प्रभावित हुयी है। विद्यालयों के बंद पड़ जाने से ज्यादातर दशों ने अपने–अपने छात्रों के लिए ऑनलाईन या अन्य दूरस्थ माध्यमों से शिक्षा की व्यवस्था कर उन्हें जोड़े रखने का प्रयास किया किन्तु दस पद्धति से सफलता एवं गुणवत्ता में भारी अंतर रहा। इंटरनेट की उपलब्धता सुदूर क्षेत्रों में कनेक्टीविटी, शिक्षकों कों आवश्यक प्रशिक्षण भौतिक संसाधनों की प्राप्यता जैसे कई महत्वपूर्ण विन्दु है जिससे दूरवर्ती शिक्षा का व्यवहार में लाना प्रभावित हुआ है।

बदलते समय में अध्ययन की आदतें भी लगातार बदलती जा रही है। अध्ययन आदत का संपूर्ण मानव जाति के लिए विशेष महत्व है, इससे हमारे ज्ञान और शब्द भंडार में वृद्धि होती है। छात्रों के लिए यह और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। कोविड महामारी ने छात्रों के अध्ययन आदतों पर अपना गहरा प्रभाव डाला है। इस दौरान अध्ययन कार्य डिजिटल रूप से हुआ जो वर्तमान में भी प्रचलित है छात्रों का अध्ययन आदत का डिजीटलीकरण हो गया है। छात्रों के अध्ययन कार्य में इंटरनेट ज्ञानवर्धन के लिए अधिक से अधिक प्रयोग हुआ जिसका छात्रों पर सकारात्मक प्रभाव होने के साथ–साथ अनेक नकारात्मक प्रभाव भी रहे है, अध्ध्ययन कार्य निरंतर न होने के कारण छात्रों की अध्ययन आदत प्रभावित हयी है। वर्तमान में अध्ययन में शामिल विषयवस्तु, पाठ्यवस्तु एवं दैनिक जीवन संबंधी कार्य के लिए छात्रों मे अनेक जागरूकता आ गई है एवं भविष्य में होने वाली समस्याओं के प्रति वे सजग हो गए है। कोविड– 19 का छात्रों के अध्ययन आदतों पर सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभाव पड़े है जिनका विश्लेषण निम्न बिन्दुओं के आधार पर किया जा सकता है।

1. **अधिगम सामग्रियों के उपयोग पर प्रभाव** –कोविड–19के पहले छात्र ज्यादातर पेन, कॉपी, किताब का ही अध्ययन के लिए उपयोग करते थे। परंतु कोरोना महामारी के आने से अध्ययन के तरीकों मे काफी बदलाव हुआ। इसमें स्कूल –कॉलेजों की कक्षाऐं ऑनलाईन माध्यमों से संचालित होने लगी, जिससे छात्र अधिकांश अध्ययन ऑनलाईन के माध्यम से ही करने लगे। पहले की अपेक्षा नोट्स बनाकर अध्ययन करने में कमी

आयी। क्योकि अधिकांश सामग्री ऑनलाईन उपलब्ध हो जा रही थी। इस प्रकार से छात्रों की निर्भरता पुस्तकों की अपेक्षा ऑनलाईन माध्यमों पर अधिक हो गई।

2. **अध्ययन की रूचि पर प्रभाव** –लॉकडाउन से पहले छात्र प्रतिदिन विद्यालय में अध्ययन के लिए जाते थे, पुस्तकों से सीधे पढ़ाई करते थे, शिक्षकों के द्वारा प्रत्यक्ष रूप से शिक्षण करवाया जाता था, जिससे अध्ययन में रूचि बनी रहती थी, परंतु कोविड –19 के दौरान विद्यालय में जाकर किया जाने वाला अध्ययन थम गया, अध्ययन अध्यापन ऑनलाईन माध्यम से होने लगे। छात्रों द्वारा मोबाईल का उपयोग अधिक किया जाने लगा। विद्यालय से जो भी जानकारी प्रदान की जाती थी वो भी ऑनलाईन के माध्यम से मिलने लगी। जिससे छात्रों की समझने एवं पढ़ाई में रूचि कम हो गयी।
3. **परीक्षा पर प्रभाव** –परीक्षाऐं ऑनलाईन होने से छात्रों द्वारा गूगल, व्हाट्सप, यूट्यूब, से कक्षाये लेना और उसको देखकर, नकल कर लिखना सीख गया। जो सामान्य परीक्षा की तुलना में समय की बाध्यता नही रही फलस्वरूप छात्र पाठ्यक्रम का विस्तार से अध्ययन नही करते थे। कोविड–19 के बाद जब स्थिति सामान्य हो गई तब परीक्षा में अनेक शाररिक, मानसिक समस्याओं का सामना छात्रों को करना पड़ा।
4. **ऑनलाईन मोड पर अध्ययन को बढ़ावा** –कोविड–19 के पूर्व छात्र पुस्तक के माध्यम से ही अध्ययन करते थे। विद्यालय में, शिक्षकों के द्वारा ही अध्ययन कार्य कराया जाता था। ऑनलाईन कक्षा के नाम से छात्र परिचित भी नही थे, जो उनके अध्ययन में लाभदायक हो सकता है। कोविड आने से पढ़ाई का माध्यम ऑनलाईन होने लगा जिससे छात्र लगातार अध्ययन सामग्री की प्राप्ति के लिए अनेक प्रोग्राम की सहायता लेने लगे। गूगल मीट, जूम एप आदि माध्यमों से ऑनलाईन पढ़ाई हाने लगी, जिससे छात्रों को अपने विषय के बारे में अधिक जानकारी मिलना प्रारंभ हो गया। समझ नही आने से शिक्षकों से ऑनलाईन पूछकर अपनी समझ बढाने लगे।

   इंटरनेट पर बहुत सारे शिक्षक बेहतरीन तरीके से पढ़ाते थे। एक शिक्षक से समझ नही आने पर दूसरे शिक्षक से उसी विषयवस्तु को पढ़ाने की सुविधा होती है, इससे छात्रों को विषयवस्तु बेहतर ढंग से समझ आने लगे थे, जो विद्यालय के कक्षाओं में यह सुविधा मिल पाना संभव नही था। धीरे–धीरे ऑनलाईन कार्यक्रम को बढ़ावा मिलता गया और छात्रों पर उसका प्रभाव भी देखा जाने लगा।
5. **अनुशासन पर प्रभाव** –सामान्य दिनों में कक्षा कक्ष में अध्ययन करते समय शिक्षक हमारे सामने प्रत्यक्ष रूप से उपस्थित होकर अध्यापन कराते थे। किन्तु कोविड के समय ऑनलाईन आभासी अध्यापन होना प्रारंभ हो गया, जिसमें अधिकांश छात्र नेटवर्क का बहाना, विडियों ऑन करके न जुडना, काम करते–करते कक्षा मेंशामिल होना जैसे अनेक अनुशासन में कमी का सामना करना पड़ा जो वर्तमान में भी कही नकहीं छात्रों के जीवनचर्या में शामिल हो गया है। छात्रों में अनुशासन मे रहकर पड़ने की आदत में कमी हुई। नियमित विद्यालय न जाने से समय प्रबंधन न करने की आदत बन गई। सही समय पर प्रातः उठना, भोजन, स्नान तथा अध्ययन न कर पाने की समस्या उत्पन्न हो गई।

6. **उच्च स्तर के शिक्षा का सरलता से ज्ञान** –कोविड –19का अध्ययन आदत पर एक प्रभाव यह पड़ा कि परंपरागत रूप से कक्षा में शिक्षक के सामने बैठकर अध्ययन करने की व्यवस्था के आलावा तकनीक एवं इंटरनेट के माध्यम से ऑनलाईन अध्ययन के व्यवस्था का आधार मजबूत हो गया। वर्तमान समय में बड़ी से बड़ी उच्च शिक्षा संबंधित कोई भी प्रोफेशनल डिग्री की भी पढ़ाई ऑनलाईन के माध्यम से पूरी की जा सकती है। छात्रों के अध्ययन करने के तरीके में भी परिवर्तन हुआ। शिक्षा का मध्यम केवल पाठ्यपुस्तक न होकर इंटरनेट पर मौजूद सर्वे, रिसर्च एवं ऑनलाईन कक्षाओं का आयोजन भी बहुत अच्छे विकल्प के रूप में उभर कर सामने आया है, जिससे छात्र अपनी अपने इच्छानुसार उच्च शिक्षा से संबंधित समस्त ज्ञान, सरलता से प्राप्त कर सकते है।
7. **शिक्षा का व्यवसाय** – वैसे तो शिक्षा काव्यवसाय प्रारंभ से चलते आ रहा है, परंतु कोविड –19 के समय से तकनीकी एवं इंटरनेट के ज्ञान के कारण जो छात्र का ज्ञान किसी विषय पर अधिक था तो वे भी अपने अध्ययन से संबंधित विडियो आदि बनाकर ऑनलाईन कक्षायें लेना प्रारंभ किए जिससे छात्रो में एक नए तरह के व्यवसाय को विकास करने का अवसर प्राप्त हुआ।
8. **परीक्षा का भय** –कोविड –19 के समय में छात्रों को परीक्षा ऑनलाईन ओपन बुक्स प्रणाली के आधार पर हो गई जिसमें छात्र घर से पुस्तक देखकर परीक्षा कॉपी लिखकर परीक्षा में शमिल होने लगे। छात्रों में परीक्षा का भय पूरी तरह समाप्त हो गया क्योकि उन्हे लगता था कि देखकर लिख लेंगें। परीक्षा के भय में कमी के कारण उनका जो ध्यान अध्ययन में लगता था वह कम हो गया।
9. **कक्षा पदोन्नती** –कोविड –19 के अनेक नकारात्मक प्रभावों मे से एक नकारात्मक प्रभाव ऑनलाईन परीक्षा और पदोन्नती मिलने के कारण अपने विषयों के पढ़ाई में मन न लगना। अपने विषय की तैयारी न करके अन्य प्रतियोगिता और भर्तियों संबंधित विज्ञापनों को देखकर अध्ययन करना इसका सीधा प्रभाव अपने विषय को पूरा न कर पाने अपने विषय के अंकों मे गिरावट होना। जिसके कारण पुस्तक पढ़ने की रूचि कम होना भी है।
10. **समायोजन क्षमता का विकास** –कोविड के पहले समस्त छात्रों द्वारा अपने अध्ययन हेतु अनेक योजना बनाये जाते थे कि मै विद्यालय के शिक्षा ग्रहण करने के बाद उच्च शिक्षा हेतू किसी अच्छा संस्था में जाउंगा, या किसी विशेष स्थान में जाकर अध्ययन करूंगा, किंतु कोविड की वजह से नही जा सके । वे अपने इच्छाओं का दमन किए और घर पर ही रहकर अपना अध्ययन कार्य पूरा किए। इस प्रकार से अनेक ऐसे कार्य करना सीखे या हालातों का सामना करना सीखे जिससे उनके अंदर एक प्रकार से समायोजन कर सकने की क्षमता का विकास हुआ।
11. **समय का उचित प्रबंधन एवं सदुपयोग कर सकना** –कोविड–19 से पहले छात्र अधिकतर पुस्तकों से अध्ययन करे थे, परंतु कोविड–19के बाद छात्र मोबाईल का प्रयोग कर अध्ययन करना प्रारंभ कर दिया। और यह छात्रों के लिए लाभप्रद हुआ क्योकि

अधिकांश छात्र के दूरदराज में रहने के कारण शिक्षण संस्थानों से आने– जाने में अनेक समस्यायें आती थी, उससे होने वाली परेशानी दूर हो गयी। कोविड–19 के बाद छात्र अपने घर पर रहकर सुरक्षित रूप से अध्ययन–अध्यापन भी कर रहे थे एवं समय का सदुपयोग कर अपने खाली समय में अध्यापन का कार्य करने लगे पढ़ने का कोई निश्चित समय नही था, छात्रो को जब इच्छाा होती थी तब पढ़ाई करते थे। ऑनलाईन के माध्यम से अध्ययन करने पर छात्रों को श्रम कम करना पड़ रहा था एवं समय भी पर्याप्त मिलने लगा था जिससे छात्रों के अध्यापन कार्य में सुधार आया।

कोविड–19 के दौरान कक्षायें ऑनलाईन के माध्यम से होने लगी जिससे समय के प्रबंधन में परेशानी होती थी। ऑनलाईन कक्षा में नेटवर्क के समस्या के कारण अध्ययन में बाधा उत्पन्न होती थी। शिक्ष्कों के साथ समन्वय स्थापित करने में परेशानी होती थी। शिक्षकों के पढ़ाने के तरीके में परीवर्तन हुआ कोविड–19 के पश्चात हमें अध्ययन के लिए आनलाईन कक्षाओं का विडियो प्राप्त होने लगे। जिससे हम अपने समय के अनुसार पढ़ाई कर सकते थे ।

12. **प्रायोगिक कार्यो की अज्ञानता –**कोविड –19 के समय विज्ञान से संबंधित विषय जिसको पहले प्रयोग एवं प्रेक्षणों द्वारा अध्ययन करवाया जाता था, वे समस्त विषय मोबाईल के माध्यम से पढ़या जाने लगा, जिससे छात्र स्वयं उपस्थित होकर प्रयोग नही कर पाते थे, इसका प्रभाव छात्रों के भविष्य पर पड़ा। वे छात्र जो पहले प्रयोग के माध्यम से अध्ययन करते थे उन्हे अपने विषय का अच्छा ज्ञान हुआ करता था, किन्तु प्रयोगों के बिना अध्ययन से छात्र–छात्राओं का विषय पर से पकड़ धीरे–धीरे कम होता गया। अध्ययन के प्रति रूचि में कमी होती गई। छात्रों का अध्ययन नीरस लगने लगा, जब कोविड के बाद पुनः विद्यालय एवं महाविद्यालय प्रारंभ हुए तो छात्रों को कोविड काल की निरसता के कारण विषयवस्तु ढंग से याद नही थी, जिस कारण छात्र आगे का अध्ययन ढंग से नही कर पाये तब उन छात्रों को अध्ययन बोझ सा लगने लगा है।
13. **एक स्थान पर बैठ कर पढ़ने की आदत पर प्रभाव –**कोविड- 19 के समय हमारे सभी प्रकार के अध्ययन–अध्यापन की निर्भरता ऑनलाईन के माध्यम से हो गई। ऑनलाईन होने के कारण पढ़ने का कोई निश्चित स्थान एवं समय भी नही रहता था । छात्र घर का काम करते–करते भी अपना अध्ययन जारी रखते थे और छात्रों की इसी आदत ने उनको एक स्थान पर बैठकर पड़ने से दूर कर दिया और छात्रो में एक स्थान पर बैठकर अध्ययन करने की आदत छूट गई, और काम करते करते घूम–घूम कर अध्ययन करने की आदत का विकास हो गया, जो अभी भी अनेक छात्रों मे बना हुआ है।
14. **ध्यान और एकाग्रता पर प्रभाव –**कोविड –19 से पूर्व छात्र अपना अध्ययन योजनाबद्ध ढंग से करते थे।कितने दिनों तक किसी पाठ को पूरा करना है उसको योजना बनाकर पूरा करते थे। एकाग्र होकर किसी विषय को समझते थे, किंतु कोविड के आने से घर से अध्ययन तो करते थे लेकिन ध्यान एवं एकाग्रता नही रह पाती थी क्योकि कोविड में सभी लोग घर में ही रहते थे, जिसके कारण ध्यान भटक ही जाता था।

कोविड –19 के कारण पढ़ाई के तरीकों में भी परिवर्तन आए। जिसका असर सभी बच्चों में एक जैसा नही रहा। पढ़ाई को ऑनलाईन करने के कारण छात्रों के समझने की शक्ति में कमी आई। बच्चे जितना एक कक्षा में बैठकर सीखते थे, वैसा वे मोबाईल में ऑनलाईन कक्षा के माध्यम से नही सीख पाए। छात्रों मे मोबाईल का प्रयोग बढ़ा और वे अपने पढ़ाई से विचलित हो गए। छात्रों मे कुछ भी पढ़कर पढ़ने से ज्यादा सुनकर अध्ययन करने की आदत होते गई। ऑनलाईन कक्षा और मोबाईल के अधिकाधिक प्रयोग से छात्रों की ध्यान, एकाग्रता शक्ति भी प्रभवित हुई ।

15. **सुविधाविहीन परिवारों पर प्रभाव** –समाज में सभी छात्र एक ही वर्ग के नही होते। मध्यम, निम्न एवं निर्धन वर्ग के परिवार भी होते है जो अपने दैनिक आवश्यकता की पूर्ति भी नही कर सकते। बहुत से निर्धन परिवारों के पास मोबाईल न होने के कारण उनको अध्ययन से वंचित भी होना पड़ा। उनसे तो मानो अध्ययन छूट ही गया। उनको कोई उचित निर्देशन एवं परामर्श भी नही मिले जिससे वे अपने अध्ययन को जारी रख सके।
16. **स्व–अध्ययन की आदत का विकास**– कोविड –19 के अनेक अध्ययन आदतों में सुधार में एक सुधार यह हुआ कि ऑनलाईन कक्षाऐं प्रारंभ हो गई जिससे छात्र तकनीकियों से जुड़े साथ ही स्वयं से पुस्तक पड़ना एवं उसको समझना किसी भी विषय को पढ़ने की आदत भी बनाये। अधिकांशतः यह देखा जाता है कि वर्तमान समय में छात्र ट्यूशन या अन्य शिक्षकों पर ही निर्भर होते है जिससे छात्र स्व अध्ययन पर अधिक ध्यान नही दे पाते है अर्थात दूसरो पर अधिक निर्भर होते है। कोविड के पश्चात छात्रों में स्व अध्ययन की क्षमता का विकास हुआ है।
17. **अध्ययन की निरंतरता में कमी**– निरंतर कक्षाओं के संचालन से प्रतिदिन के अध्यापन के कारण अध्ययन की निरंतरता बनी हुई थी, प्रतिदिन के अभ्यास से समझाने की क्षमता एवं मस्तिष्क का विकास होता जाता था। कोविड –19 के पहले का अनुभव देखा जाए तो प्राथमिक कक्षा से बारहवीं तक की अध्ययन की प्रक्रिया जो निरंतर थी वह निःसंदेह निरंतर व्यवस्थित थी। कोविड –19 के कारण स्कूल, कॉलेज बंद हुए । छात्रों की स्कूल जाने की, स्कूल में गृहकार्यों को सकारात्मक रूप से करने की क्षमता व आदतों में कमी आने लगी। घर मे अध्ययन करने के कारण अध्ययन की निरंतरता में कमी आने लगी। समय की भी कोई पाबंदी नही होने के कारण अध्यापन में कमी होने लगी।

    निरंतर रूप से अध्ययन करने के लिए ध्यान एवं वातावरण का तालमेल सही तरीके से नही बैठ पाया जिससे छात्रों की एकाग्रता प्रभावित होने लगी। अवधारणओं को समझाने में, तर्क करने में, सोचने–विचारने की क्षमता में कमी आते गयी। कोविड के कारण छात्रों के अध्ययन की निरंतता में इस प्रकार प्रभाव पड़ा कि छात्रों में परीक्षा के लिए डर एवं उत्साह नही रह गया। अध्ययन के स्वरूप में परीवर्तन हो गया । छात्रों में निरंतर घंटों तक एक स्थान पर बैठकर अध्ययन करने की जो आदत थी वह अत्यंत कम हो गया।
18. **अध्ययन के समय पर प्रभाव** –कोविड –19 के छात्रों के अध्ययन आदतों में से एक आदत अध्ययन के समय पर प्रभाव है। छात्र विद्यालय, महाविद्यलय जाने के बजाय घर

पर ही रहकर अध्ययन करने लगे थे, जिसमें समय की कोई बंदिश नही थी। जिस प्रकार से विद्यालयों मे पाठ्यक्रम एवं विषयों के अनुरूप समय निश्चित रहता था वैसे घर में रहकर अध्ययन करने मे नही पाया गया। छात्र अपनी रूचि के अनुसार समय निर्धारित कर अध्ययन करने लगे। इसका अनुकूल के साथ–साथ प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ा। छात्र समयबद्धता से मुक्त हो गए। छात्रों मे आलसीपन आ गया जिसका प्रभाव वर्तमान में छात्रों के अध्यन आदतों में परिलक्षित होता है।

19. **प्रोत्साहन पर प्रभाव–** कोविड–19 के बाद छात्रों में अध्ययन की अभिरूचि में बदलाव देखने को मिला। जैसे–जैसे छात्र अध्ययन करते गए उनको ऑनलाईन के माध्यम से अनेक दिशा एवं मार्गदर्शन मिलते गए। सही मार्गदर्शन जिन छात्रों को मिला उनमें अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ती गयी। अनेक छात्रों में प्रोत्साहन के कारण बदलाव देखने को मिले। जिससे उनमें अच्छी आदत के साथ–साथ अध्ययन को निरंतर करने में सुधार आया। छात्र प्रोत्साहन के कारण अध्ययन के सही अर्थ को समझने लगे।
20. **स्मरण शक्ति पर प्रभाव –**कोविड– 19 का शिक्षा की आदत पर एक बुरा प्रभाव यह पड़ा कि छात्रों में याद करने एवं सीखे हुए ज्ञान को धारण करके रखने एवं उसको पुनः स्मरण करने की क्षमता में कमी पायी गयी। छात्र किसी तथ्य को अल्प समय तक ही धारण करके रख रहे थे एवं उसको स्मरण करने में उन्हें अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था।
21. **काम के साथ अध्ययन–** कोविड–19 का अध्ययन आदत पर हमारे जीवन मे जो पढ़ाई में कमजोर थे। आर्थिक स्थिति के कारण भी अध्ययन नही कर पा रहे थे, वे सभी अपना अध्ययन पूरा कर लिए। घर में अपने व्यवसाय करते हुए घर का काम करते हुए, भी अनेक छात्रों ने अपना अध्यापन कार्य किया।
22. **सहपाठियों के साथ समूह चर्चा में बाधा–**कोविड –19 के दौरान समस्त छात्र घर में रहकर ही अध्ययन कर रहे थे। जिससे छात्रो का आपस में प्रत्यक्ष रूप से मिलना नही होता था, नही मिल पाने के कारण आपसी वार्तालाप एवं अध्ययन के संबंध में चर्चा नही हो पाती थी। समूह चर्चा से अध्ययन दृढ़ता आती है और सीखा हुआ ज्ञाान मजबूत होता है। जो कि मोबाईल में अध्ययन करने से प्रत्यक्ष रूप से मिलना और आमने सामनें विषय पर चर्चा करने से प्राप्त होने वाले ज्ञान का आभाव रह गया।
23. **किताब पड़ने के आदत–**कोविड– 19 के बाद विद्यार्थियों में पढ़ने तथा लिखने की क्षमता में कमी आयी। ऑनलाईन अध्ययन हो जाने के कारण छात्र सुनकर अध्ययन करना पसंद करने लगे थे, तथा लिखने एवं पढ़ने में उनका मन नही लगता था। जिस कारण से छात्रों में किताब के माध्यम से अध्ययन करने की आदत कम हो गई। किताब का स्थान ऑनलाईन कार्यक्रम ने ग्रहण कर लिया था जिसको छात्र देख एवं सुनकर अध्ययन करने की आदत बना लिए।
24. **काल्पनिक विडियो (मल्टीमिडीया) के माध्यम से पढ़ना–** ऐसे बहुत सारे तथ्य हमारे पाठ्यक्रम में उपलब्ध है जिसके लिए छात्रों को अमूर्त चिंतन करने की आवश्यकता होती है। जिसकी निर्भरता किताबों में हाने के कारण अध्ययन करने में छात्रों को अनेक

समस्याऐं होती थी। काविड–19 के पश्चात अध्ययन के स्वरूप में व्यापक वृद्धि हुयी। छात्रों के साथ–साथ शिक्षकों ने भी अध्ययन के वैकल्पिक स्त्रोत के माध्यम से और अधिक विस्तार से समझाने का प्रयास किए। जिसके फलस्वरूप छात्र एवं शिक्षक, किताब अध्ययन के तुलना में मल्टीमीडया से बने काल्पनिक विडियों जो अमूर्त को मूर्त रूप देकर बनाया गया हुआ रहता था, को प्रयोग करने लगे। श्रव्य–दृश्य सामग्री मल्टीमिडिया के माध्यम से प्राप्त होने लगे। इससें छात्रों को विकल्प मिलता गया और अध्ययन रूचिपूर्ण होता गया। अध्ययन में आडियो–विडियो एवं मल्टीमिडीया के सामग्री होने से शिक्षण और भी प्रभावी होते गया।

25. **शिक्षकों से सीधे संपर्क कर अध्ययन न कर पाने का प्रभाव–** कोविड–19 में छात्र ऑनलाईन के माध्यम से अध्ययन करने के कारण एवं प्रत्यक्ष रूप से शालाओं मे अध्ययन नही करने के कारण शिक्षकों से सीधे संवाद करके अध्ययन नही कर पाये। परिणाम यह निकला कि जब छात्र पुनः अध्यापन कार्य के लिए विद्यालय गए तब किसी विषय को लेकर वही अनेक विकल्प खोजने लगे जो उनको ऑलाईन के माध्यम से मिलता था। छात्र ऑनलाईन उन तथ्यों को सीख सकते है लेकिन पूरा समय छात्रों द्वारा विद्यालयों में देने के बाद घर जाकर उसकों पुनः ऑनलाइन के माध्यम से अध्ययन करने में अधिक समय हो जाता है। जिसके कारण छात्रों में आलसी पन भी होता गया।
26. **पठन कौशल में कमी –**कोरोना महामारी के पश्चात हमारे अध्ययन आदतों में पड़े अनेकों प्रभावों में से एक प्रभाव पठन कौशल में कमियों का आना है। हमारा मन अध्ययन कार्यो में नही जा रहा था, जिसका प्रभाव छात्रों के परीक्षा परिणामों में भी सीधे दिखाई देने लगा। किताबों से बच्चे सीधे पढ़ाई नही किए जिस कारण से पठन संबंधी अध्ययन आदत छूट गया, अध्ययन शैली में कोविड के पश्चात हमारी आदतें एवं बुद्धि का विकास मंद गति से हो रहा था। कोविड महामारी के पश्चात बालको की अध्ययन आदत में सुधार हो रहा है एवं पठन कौशल भी विकसित हो रही है। पूर्व ज्ञान भी याद नही रह पाता था।
27. **लिखने की आदत पर प्रभाव –**कोविड–19 के समय सभी कार्य ऑनलाईन करने के कारण छात्रों में लिखने की आदत में कमी आयी है। कोविड के समय अधिकांशतः अध्ययन ही किया जाता था लिखने की क्रिया अत्यंत कम ही होती थी जिससे छात्रों में लिखने की कम आदत हो गई।
28. **पढ़ाई का दिनचर्या–** कोविड–19 के पूर्व सभी की दिनचर्या में अध्ययन का एक नियमित समय रहता था। परंतु कोरोना के समय घर से निकलना बंद हो गया, सभी को अपने बीमारी एवं जिन्दगी की समस्या आने लगी, जिस कारण से समय पर कार्यो को पूरा नही कर पाए, अनेक छात्रों का अध्ययन छूट गया। लोगों ने अपनी उम्मीद ही छोड़ दिया था, अध्ययन का महत्व कम हो गया, लोगों को भोजन पानी की समस्या होने लगी थी।

सारांश –

कोविड–19 के आने से पूरे देश में लॉकडाउन लग गया। जिसके कारण सभी विद्यालय महाविद्यालय, दुकानें आदि बन्द हो गए। सभी का घर से बाहर निकलना बंद सा हो गया था। कोविड से पूर्व सभी छात्र अध्ययन हेतु विद्यालय आदि स्थानों को जाते थे लेकिन कोविड–19 के आ जाने से सभी घर पर ही रहने लगे, जिससे छात्रों का समस्त अध्ययन–अध्यापन का कार्य घर से ही होने लगा। घर पर अध्ययन के अतिरिक्त अन्य क्रियाकलाप भी करने लगे। अध्ययन के नाम पर ऑनलाईन कक्षाओं का संचालन किया जाने लगा, जिससे सभी छात्रों के हाथ में मोबाईल आ गया। माबाईल मिलते ही छात्र अध्ययन के अतिरिक्त अन्य कार्य गेम खेलना, विडियो कार्टून, आदि करने लगे। कुछ छात्रों पर विपरित प्रभाव भी पड़ने लगा जो बहुत अध्ययन करते थे वो कम हो गया एवं जो छात्र अध्ययन नही कर पाते थे वे अच्छे से अध्ययन करने लगे। इस प्रकार से कोविड–19के बाद छात्रों के अध्ययन आदत प्रभावित हुआ।

ह्यूमन राईट्स वॉच की सीनियर एजुकेशन रिसर्च एलिन मार्टिनेज के अनुसार– ''महामारी के दौरान लाखों बच्चों के शिक्षा से वंचित होने के कारण अब समय आ गया है कि बेहतर, अधिक न्यायपूर्ण एवं मजबूत शिक्षा प्रणाली का पनर्निमाण कर शिक्षा के अधिकार को सुदृड़ किया जाए। इसका उद्देश्य केवल महामारी से पहले की स्थिति बहाल करना नही बल्कि व्यवस्था की उस खामियों को दूर करना होना चाहिए जिनके कारण लंबं समय से स्कूल दरवाजे सभी बच्चों के लिए खुले नहीं है।